दूसरों को प्रभावित कैसे करें ?

शैली गुलाटी, जे.आर.एफ.

"मैं आपसे बहुत इम्प्रेस्ड हूँ" यह एक ऐसा वाक्य है जिसे सुनना सभी पसन्द करते हैं और स्वयं को गौरवान्वित करते हैं। आपके व्यक्तित्व में इतना आकर्षण और खिंचाव हो, जो दूसरों को प्रभावित कर दे। परन्तु प्रभावशाली व्यक्तित्व किसी एक या दो गुणों से नहीं बनता, बल्कि इसके लिए आवश्यक है कि आप नीचे बताये गये कुछ महत्वपूर्ण गुण भी अपनाएं और व्यक्तित्व को ओजस्वी-तेजस्वी बनाएं।

व्यवहार कुशलता

एक खुशमिजाज और विनोदप्रिय व्यक्ति जिसके होठों पर सदा खिलखिलाहट रहती हो, दूसरों को अपनी ओर आकर्षित करता है। जो व्यक्ति जानता हो कि किस तरह की बातों में श्रोता को रूचि है और किससे किस तरह की बातें करनी चाहिए या किस अवसर पर कैसी बातें करनी चाहिए, वही निःसन्देह दूसरों को प्रभावित करता है।

आत्मविश्वास

जिस तरह घर औरत के बिना बेमानी होता है, उसी तरह आत्मविश्वास के अभाव में सारे गुण अधूरे रह जाते हैं। मान लीजिए ईश्वर ने आपको बहुत मधुर कंठ दिया हो, जिसके स्वर का जादू बिखेरते ही मुग्धता छा जाती हो, पर ज्यों ही आप स्टेज पर जायें और श्रोताओं को देखें आपका आत्मविश्वास डगमगा जाए, हाथ पैर कॉपने लगें और आप जल्दी-जल्दी उस गीत को अधूरा ही गाकर चले आएं, तो स्वाभाविक है कि आपके गाने से बहुत ही कम लोग प्रभावित होंगे और गुण होते हुए भी आप पिछड़ जायेंगे। अतः ध्यान रखें, भरपूर आत्मविश्वास से पूर्ण तथा निडर व्यक्ति ही दूसरों पर अपनी अमिट छाप छोड़ सकते हैं।

घमण्ड से बचें

प्रभावित करने का यह सबसे महत्वपूर्ण सूत्र है। उपर्युक्त गुणों के साथ यदि व्यक्ति में अहम की भावना न जाग्रत हो तो व्यक्तित्व में और भी निखार आ जाता है, परिणामस्वरूप लोग महापुरूष कहलाने लगते हैं। अतः आपका बड़प्पन इसी में है कि सब विशेषताएं रखते हुए भी आप सहज और स्वाभाविक दिखें, विनम्र बनें।

झूठी शान न दिखाएं

कई लोग सोचते हैं कि अपने बारे में बढ़ा-चढ़ाकर बतलाकर वह दूसरों को प्रभावित कर लेंगे। हो सकता है कि कुछ व्यक्ति ऐसे लोगों से सचमुच प्रभावित हो जायें परन्तु ऐसे व्यक्तियों की जब पोल खुलती है तो उनकी बची-खुची इज्जत की भी अर्थी उठ जाती है। बेहतर तो यही होगा कि आप जो हैं, जैसे हैं लोग आपको स्वीकारें । अतः व्यर्थ का दिखावा या ढोंग करने से बचें।

बुद्धिमत्ता

व्यक्तित्व में पूर्णता लाने के लिए बौद्धिक विकास भी आवश्यक है। उपर्युक्त गुणों में यदि ज्ञान का भी समावेश हो जाए, तो सोने पे सुहागा सिद्ध होता है।